डायरी का एक पन्ना

कक्षा - दसवीं

विषय – हिंदी
पाठ : 2
पाठ का नाम : डायरी का एक पन्ना
PPT-1

Website: www.odmegroup.org
Email: info@odmps.org
Toll Free: 1800 120 2316
Sishu Vihar, Infocity Road, Patia, Bhubaneswar- 751024

डायरी लेखन

अपने भावनाओं या किसी भी प्रकार की जानकारी को डायरी में लिखने की प्रक्रिया ही डायरी लेखन कहलाती हैं।

डायरी लिखने के लाभ

1. सचेतनता बढ़ती जाती है।
2. स्टूडेंट्स को लक्ष्य हासिल करने में मदद।
3. भावनात्मक समझ बढ़ती है।
4. संपर्क कौशल बढ़ता है।
5. रचनात्मकता बढ़ती है।

लेखक परिचय

लेखक - सीताराम सेकसरिया
जन्म - 1892 (राजस्थान -नवलगढ़)
मृत्यु - 1982

डायरी का **एक पन्ना** सीताराम सेकसरिया द्वारा लिखित **एक** संस्मरण है, जो हमें 1930-31 के आस पास हो रही राजनीतिक हलचल के बारे में बताता है। इस पाठ में **लेखक** की **डायरी** में 26 जनवरी 1931 दिन का लेखा जोखा है। ... इसमें उस दिन घटित की घटनाओं का वर्णन है, जब बंगाल के लोगों ने स्वतंत्रता संग्राम में भाग लेने के लिए अपूर्व जोश दिखाया था।

पाठ प्रवेश

अंग्रेजों से भारत को आज़ादी दिलाने के लिए महात्मा गाँधी ने सत्याग्रह आंदोलन छेड़ा था। इस आंदोलन ने जनता में आज़ादी की उम्मीद जगाई। देश भर से ऐसे बहुत से लोग सामने आए जो इस महासंग्राम में अपना सब कुछ त्यागने के लिए तैयार थे। 26 जनवरी 1930 को गुलाम भारत में पहली बार स्वतंत्रता दिवस मनाया गया था। उसके बाद हर वर्ष इस दिन को स्वतंत्रता दिवस के रूप में मनाया जाने लगा। आजादी के ढ़ाई साल बाद ,1950 को यही दिन हमारे अपने संविधान के लागू होने का दिन भी बना।

प्रस्तुत पाठ के लेखक सीताराम सेकसरिया आज़ादी की इच्छा रखने वाले उन्हीं महान इंसानों में से एक थे। वह दिन -प्रतिदिन जो भी देखते थे ,सुनते थे और महसूस करते थे ,उसे अपनी एक निजी डायरी में लिखते रहते थे। यह कई वर्षों तक इसी तरह चलता रहा। इस पाठ में उनकी डायरी का 26 जनवरी 1931 का लेखा-जोखा है जो उन्होंने खुद अपनी डायरी में लिखा था।

नेताजी सुभाष चंद्र बोस और स्वयं लेखक सहित कलकत्ता (कोलकता) के लोगों ने देश का दूसरा स्वतंत्रता दिवस किस जोश के साथ मनाया, अंग्रेज प्रशासकों ने इसे उनका विरोध मानते हुए उन पर और विशेषकर महिला कार्यकर्ताओं पर कैसे -कैसे जुल्म ढाए, इन सब बातों का वर्णन इस पाठ में किया गया है।यह पाठ हमारे क्रांतिकारियों की कुर्बानियों को तो याद दिलाता ही है साथ ही साथ यह भी सिखाता है कि यदि एक समाज या सभी लोग एक साथ सच्चे मन से कोई कार्य करने की ठान लें तो ऐसा कोई भी काम नहीं है जो वो नहीं कर सकते।

संबंधित प्रश्न -

1.पाठ और लेखक का नाम बताइए ।
2.कलकत्ता वासियों के लिए २६ जनवरी १९३१ का दिन क्यों महत्वपूर्ण था?
3.लोग अपने-अपने मकानों व सार्वजनिक स्थलों पर राष्ट्रीय झंडा फहराकर किस बात का संकेत देना चाहते थे?
4.‘आज जो बात थी वह निराली थी’– किस बात से पता चल रहा था कि आज का दिन अपने आप में निराला है? स्पष्ट कीजिए।

पाठ सार

प्रस्तुत पाठ के लेखक सीताराम सेकसरिया आज़ादी की इच्छा रखने वाले महान इंसानों में से एक थे। वह दिन -प्रतिदिन जो भी देखते थे ,सुनते थे और महसूस करते थे ,उसे अपनी एक निजी डायरी में लिखते रहते थे । इस पाठ में उनकी डायरी का 26 जनवरी 1931 का लेखा -जोखा है जो उन्होंने खुद अपनी डायरी में लिखा था।

लेखक कहते हैं कि 26 जनवरी 1931 का दिन हमेशा याद रखा जाने वाला दिन है। 26 जनवरी 1930 के ही दिन पहली बार सारे हिंदुस्तान में स्वतंत्रता दिवस मनाया गया था और 26 जनवरी 1931 को भी फिर से वही दोहराया जाना था जिसके लिए बहुत सी तैयारियाँ पहले से ही की जा चुकी थी। सिर्फ़ इस दिन को मनाने के प्रचार में ही दो हज़ार रुपए खर्च हुए थे। सभी मकानों पर भारत का राष्ट्रीय झंडा फहरा रहा था और बहुत से मकान तो इस तरह सजाए गए थे जैसे उन्हें स्वतंत्रता मिल गई हो। कलकत्ते के लगभग सभी भागों में झंडे लगाए गए थे। पुलिस अपनी पूरी ताकत के साथ पूरे शहर में पहरे लिए घूम -घूम कर प्रदर्शन कर रही थी। न जाने कितनी गाड़ियाँ शहर भर में घुमाई जा रही थी। घुड़सवारों का भी प्रबंध किया गया था। स्मारक के नीचे जहाँ शाम को सभा होने वाली थी, उस जगह को तो सुबह के छः बजे से ही पुलिस ने बड़ी संख्या में आकर घेर कर रखा था ,इतना सब कुछ होने के बावजूद भी कई जगह पर तो सुबह ही लोगों ने झंडे फहरा दिए थे। तारा सुंदरी पार्क में बड़ा बाजार कांग्रेस कमेटी के युद्ध मंत्री हरिश्चंद्र सिंह झंडा फहराने गए परन्तु वे पार्क के अंदर ही ना जा सके।

वहां पर भी काफी मारपीट हुई और दो - चार आदमियों के सर फट गए। मारवाड़ी बालिका विद्यालय की लड़कियों ने अपने विद्यालय में झंडा फहराने का समारोह मनाया। वहाँ पर जानकी देवी ,मदालसा, बजाज - नारायण आदि स्वयंसेवी भी आ गए थे। उन्होंने लड़कियों को उत्सव का मतलब समझाया। दो - तीन बाजे पुलिस कई आदमियों को पकड़ कर ले गई।जिनमें मुख्य कार्यकर्ता पूर्णोदास और पुरुषोत्तम राय थे। सुभाष बाबू के जुलूस की पूरी ज़िम्मेवारी पूर्णोदास पर थी (उन्हें पुलिस ने पकड़ लिया था)परन्तु वे पहले से ही अपना काम कर चुके थे। स्त्रियाँ अपनी तैयारियों में लगी हुई थी। अलग -अलग जगहों से स्त्रियाँ अपना जुलूस निकालने और सही जगह पर पहुँचने की कोशिश में लगी हुई थी।

जब से स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए कानून तोड़ने का सिलसिला शुरू हुआ था तब से आज 26 जनवरी 1931 तक इतनी बड़ी सभा ऐसे खुले मैदान में कभी नहीं हुई थी और ये सभा तो कह सकते हैं कि सबके लिए ओपन लड़ाई थी। एक ओर पुलिस कमिश्नर ने नोटिस निकाल दिया था कि अमुक -अमुक धारा के अनुसार कोई भी, कही भी, किसी भी तरह की सभा नहीं कर सकते हैं। अगर किसी भी तरह से किसी ने सभा में भाग लिया तो वे दोषी समझे जायेंगे। इधर परिषद् की ओर से नोटिस निकाला गया था कि ठीक चार बजकर चौबीस मिनट पर स्मारक के नीचे झंडा फहराया जायेगा तथा स्वतंत्रता की प्रतिज्ञा पढ़ी जाएगी। सभी लोगों को उपस्थित रहने के लिए कहा गया था। ठीक चार बजकर दस मिनट पर सुभाष बाबू अपना जुलूस ले कर मैदान की ओर निकले। जब वे लोग मैदान के मोड़ पर पहुंचे तो पुलिस ने उनको रोकने के लिए लाठियां चलाना शुरू कर दिया। बहुत से लोग घायल हो गए। सुभाष बाबू पर भी लाठियाँ पड़ी। परन्तु फिर भी सुभाष बाबू बहुत ज़ोर से वन्दे - मातरम बोलते जा रहे थे। इस तरफ इस तरह का माहौल था और दूसरी तरफ स्मारक के नीचे सीढ़ियों पर स्त्रियां झंडा फहरा रही थी और स्वतंत्रता की प्रतिज्ञा पढ़ रही थी।

स्त्रियाँ बहुत अधिक संख्या में आई हुई थी। सुभाष बाबू को भी पकड़ लिया गया और गाड़ी में बैठा कर लाल बाज़ार लॉक-अप में भेज दिया गया। कुछ देर बाद ही स्त्रियाँ वहाँ से जन समूह बना कर आगे बढ़ने लगी। उनके साथ बहुत बड़ी भीड़ भी इकट्ठी हो गई। पुलिस बीच -बीच में लाठियाँ चलना शुरू कर देती थी। इस बार भीड़ ज्यादा थी तो आदमी भी ज्यादा जख्मी हुए। धर्म-तल्ले के मोड़ पर आते - आते जुलूस टूट गया और लगभग 50 से 60 स्त्रियाँ वहीं मोड़ पर बैठ गई।
उन स्त्रियों को लाल बाज़ार ले जाया गया। और भी कई आदमियों को गिरफ्तार किया गया। मदालसा जो जानकी देवी और जमना लाल बजाज की पुत्री थी ,उसे भी गिरफ़्तार किया गया था। उससे बाद में मालूम हुआ की उसको थाने में भी मारा गया था। सब मिलकर 105 स्त्रियों को गिरफ्तार किया गया था। बाद में रात नौ बजे सबको छोड़ दिया गया था। कलकत्ता में इस से पहले इतनी स्त्रियों को एक साथ कभी गिरफ़्तार नहीं किया गया था। डॉक्टर दासगुप्ता उनकी देखरेख कर रहे थे और उनके फोटो खिंचवा रहे थे। उस समय तो 67 आदमी वहाँ थे परन्तु बाद में 103 तक पहुँच गए थे।
इतना सब कुछ पहले कभी नहीं हुआ था ,लोगों का ऐसा प्रचंड रूप पहले किसी ने नहीं देखा था। बंगाल या कलकत्ता के नाम पर कलंक था की यहाँ स्वतंत्रता का कोई काम नहीं हो रहा है। आज ये कलंक काफी हद तक धूल गया और लोग ये सोचने लगे कि यहाँ पर भी स्वतंत्रता के विषय में काम किया जा सकता है।

गृहकार्य - पाठ को पढ़कर आना ।

THANKING YOU

ODM EDUCATIONAL GROUP